वर्ष :: 34 अंक : 04
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

सभी सुधी पाठकों व शुभचिंतकों को विजयादशमी की हार्दिक शुभकामनाएं।

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 22 अक्टूबर, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

अमर 'इन', रघुवर 'आउट'

मिशन- 2024 : झारखंड में जातीय संतुलन साधने में लगी भाजपा, तरकश से निकाले कई तीर

विजय कुमार झा

रांची/बोकारो : मिशन- 2024 के तहत झारखंड की सभी 14 लोकसभा सीटों पर जीत और प्रदेश की सत्ता में वापसी का लक्ष्य लेकर चल रही भारतीय जनता पार्टी यहां जातीय संतुलन साधने में पूरी तैयारी के साथ जुट चुकी है। इसी कड़ी में भाजपा ने अपने तरकश के तीरों को चमकाना शुरू कर दिया है। दलित वोटरों को रिझाने के लिए भाजपा ने चंदनकियारी के विधायक व पूर्व मंत्री अमर कुमार बाउरी के सिर पर विरोधी दल के नेता का सेहरा बांधकर दलित तीर छोड़ा है। इसके पूर्व भाजपा की ओर से श्री बाउरी को विधायक दल का नेता घोषित कर विधानसभा में उनके नेता प्रतिपक्ष बनने का रास्ता साफ कर दिया था। अब लगभग चार साल के बाद झारखंड विधानसभा को नेता प्रतिपक्ष मिल चुका है। जबकि दूसरी ओर भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने पूर्व मुख्यमंत्री एवं पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रघुवर दास को ओडिशा का राज्यपाल बनाकर उन्हें झारखंड की राजनीति से बाहर का रास्ता दिखा दिया है।

जानकारों के अनुसार बिहार में नीतीश सरकार द्वारा जातीय जनगणना के आंकड़ों का खुलासा

किए जाने (जिसके गलत होने के दावे किए जा रहे हैं) के बाद भाजपा सतर्क हो गई है। विरोधियों की इस चाल को विफल करने के लिए ही भाजपा अब जातीय समीकरण को साधने में जुटी है। इसके तहत आबादी के हिसाब से पार्टी में नेताओं को जगह दी जा रही है। राजनीतिक प्रेक्षकों के अनुसार जातीय समीकरण को देखते हुए भाजपा ने दलित विधायक अमर कुमार बाउरी को विधायक दल का नेता घोषित कर उन्हें नेता प्रतिपक्ष की कुर्सी पर बैठाया है। इसके साथ ही ओबीसी वर्ग के विधायक जय प्रकाश पटेल को भी सचेतक की भूमिका निभाने का मौका दिया गया है। इसके पहले आदिवासी वोटरों को साधने के लिए बाबूलाल मरांडी को पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गयी। जिस तरह से पिछड़ों की आबादी है, उसी हिसाब से अन्नपूर्णा देवी और जयप्रकाश भाई पटेल को संगठन और सरकार में जिम्मेवारी दी गई है। जबकि, दो बड़े आदिवासी चेहरे बाबूलाल मरांडी और अर्जुन मुंडा क्रमशः प्रदेश अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री की जिम्मेवारी निभा रहे हैं। इसके अलावा आशा लकड़ा को राष्ट्रीय मंत्री और समीर उरांव को एसटी मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया है।

दरअसल, झारखंड में अगर जातीय समीकरण की बात करें तो पिछड़ों (ओबीसी) की आबादी यहां 55 प्रतिशत के आसपास है। वहीं, 26.3 फीसद (शेष पेज- 7 पर)

अमर कुमार बाउरी पर खेला बड़ा दांव

भाजपा ने विधायक अमर बाउरी को विधायक दल का नेता बनाकर बड़ा दांव खेला है। पार्टी के प्रदेश प्रभारी लक्ष्मीकांत वाजपेयी पहले से ही सवर्ण का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। श्री बाउरी वर्तमान में बोकारो जिले के चंदनकियारी से विधायक और भाजपा एससी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष हैं। वह एक युवा और ऊर्जावान नेता हैं, जो जमीन से जुड़े रहकर काफी संघर्ष के बाद इस मुकाम पर पहुंचे हैं। बाउरी रघुवर दास की सरकार में भू-राजस्व, कला-संस्कृति, खेल एवं युवा मामलों के मंत्री थे। अमर बाउरी वर्ष 2014 में बाबूलाल मरांडी की तत्कालीन पार्टी झाविमो के टिकट पर चुनाव जीतकर झारखंड विधानसभा पहुंचे थे। लेकिन, कुछ ही दिनों बाद अपने राजनीतिक गुरु बोकारो के पूर्व विधायक, राज्य सरकार के पूर्व मंत्री एवं अविभाजित बिहार में एक कद्दावर नेता के रूप में प्रख्यात स्व. समरेश सिंह के आह्वान पर भाजपा में शामिल हो गये थे। इसके पहले भाजपा विधायक दल के नये नेता के लिये केंद्रीय पर्यवेक्षक अश्विनी चौबे ने विधायकों से उनकी राय ली थी। भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने तीन माह पहले पर्यवेक्षकों की एक टीम भेजकर यहां पार्टी विधायकों के बीच गुप्त रूप से रायशुमारी कराई थी। पर्यवेक्षकों की रिपोर्ट के आधार पर केंद्रीय नेतृत्व ने अमर बाउरी के नाम पर मुहर लगाई है। साथ ही, जयप्रकाश भाई पटेल को सचेतक नियुक्त किया है।

सरयू राय की भाजपा में वापसी का रास्ता साफ

जानकारों के अनुसार इसका दूसरा बड़ा कारण यह माना जा रहा है कि भाजपा नेतृत्व आगामी लोकसभा और विधानसभा के चुनाव में कोई जोखिम नहीं उठाकर पार्टी की जीत सुनिश्चित करना चाहती है। इसके लिए रघुवर दास के साथ छत्तीस के रिश्ते को लेकर भाजपा से अलग हो चुके जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय की घर वापसी के कयास लगाये जा रहे हैं। दरअसल, भाजपा की पिछली सरकार में मंत्री रहे जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय से खुंदक का खामियाजा न सिर्फ रघुवर दास को, बल्कि भाजपा को भी उठाना पड़ा था। 2019 के विधानसभा चुनाव में रघुवर दास के 'प्रभाव' में आकर भाजपा ने जब सरयू राय को टिकट से वंचित कर दिया तो सरयू राय बगावत पर उतर आये और अपनी पुरानी सीट (जमशेदपुर पश्चिम) की जगह जमशेदपुर पूर्वी सीट से निर्दलीय चुनाव लड़कर तत्कालीन मुख्यमंत्री रघुवर दास को उनके ही गढ़ में बुरी तरह पराजित कर दिया। इसके पहले सरयू राय ने भाजपा में रहते हुए 2014 के विधानसभा चुनाव में राज्य सरकार के वर्तमान स्वास्थ्य मंत्री और कांग्रेस प्रत्याशी बन्ना गुप्ता को हराया था। राजनीतिक प्रेक्षकों के अनुसार प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी बहुत पहले से सरयू राय की भाजपा में वापसी चाहते हैं, लेकिन इसमें भी रघुवर दास बाधक बताये जा रहे थे। संभवतः इन्हीं सब कारणों से भाजपा नेतृत्व ने रघुवर दास को राज्यपाल बनाकर झारखंड की राजनीति से फिलहाल अलग-थलग कर दिया है।

सुअवसर देश में पहली बार वीमेंस एशियन हॉकी चैंपियंस रांची में, दुनियाभर से महिला हॉकी धुरंधरों का होगा जमावड़ा

खेल-जगत में इतिहास गढ़ने को तैयार झारखंड

विशेष संवाददाता

रांची/बोकारो : देश में पहली बार वीमेंस एशियन हॉकी चैंपियंस की मेजबानी के साथ ही झारखंड खेल के क्षेत्र में एक नया इतिहास रचने जा रहा है। पहला मौका है जब रांची में हॉकी का कोई इंटरनेशनल टूनार्मेंट खेला जाएगा। खास बात यह कि पहली बार भारत को इसकी मेजबानी मिली है, जिसका दारोमदार झारखंड के कंधे पर है। हॉकी इंडिया, हॉकी झारखंड और झारखंड सरकार ने संयुक्त रूप से इसकी घोषणा की। 27 अक्टूबर से 5 नवंबर तक आयोजित होने वाले टूनार्मेंट के सभी मैच रांची के मरांग गोमके जयपाल सिंह एस्ट्रो टर्फ हॉकी स्टेडियम में खेले जाएंगे।

1985 से हो रही है प्रतियोगिता

प्राप्त जानकारी के अनुसार वीमेंस एशियन हॉकी चैंपियंस का आयोजन वर्ष 1985 से हो रहा है, जबकि पहली बार भारत को इसकी मेजबानी मिली है। बता दें कि भारतीय टीम में झारखंड की चार खिलाड़ी खेलेंगी। टीम में निक्की प्रधान, सलीमा टेटे, ब्युटी जंगजंग और संगीता कुमारी को शामिल किया गया है। चैंपियंस ट्राफी में भारत के अलावा चीन, जापान, मलेशिया, कोरिया और थाईलैंड की टीमें हिस्सा लेंगी। रोजाना तीन मैच होंगे। मैच शाम 4 बजे से शुरू होगा रात 10 बजे आखिरी मैच खत्म होगा।

पूरे देश के लिए गर्व की बात : अध्यक्ष

हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप तिर्की ने कहा कि, पहली बार झारखंड को एशियन चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी का मौका मिला है। यह सभी के लिए गर्व की बात है। इसके लिए उन्होंने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को खास तौर पर धन्यवाद दिया। तिर्की ने कहा कि जब छोटा था तब झारखंड के ट्राइबल खिलाड़ी जैसे जयपाल सिंह मुंडा व अन्य का नाम सुनता था, लेकिन उसके बाद झारखंड ने कई प्रतिभाशाली खिलाड़ी दिए।

ट्रॉफी का अनावरण व प्रदर्शनी

बोकारो के जिला परिषद सभागार में एशियाई हॉकी ट्रॉफी के अनावरण एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। अनावरण उपायुक्त कुलदीप चौधरी एवं पुलिस अधीक्षक प्रियदर्शी आलोक ने संयुक्त रूप से किया। इस संदर्भ में हॉकी झारखंड के निर्देश पर एशिया ट्रॉफी का टूर राज्य के सभी 24 जिलों में आयोजित किया गया। मौके पर डीडीसी कीर्तिश्री जी., जिला जनसंपर्क पदाधिकारी राहुल भारती, विशेष कार्य पदाधिकारी कुमार कनिष्क, जिला खेल पदाधिकारी हेमलता, विभिन्न खेल संगठनों के अध्यक्ष, सचिव, हॉकी खिलाड़ी आदि मौजूद रहे।

– संपादकीय –

भारतीय संस्कृति की जीत

देश की सर्वोच्च अदालत ने समलैंगिक विवाह को स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत मान्यता देने से इनकार कर सही मायने में एक ऐतिहासिक फैसला दिया है। सच कहा जाय तो सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की संवैधानिक बेंच का यह फैसला भारतीय सभ्यता-संस्कृति, भारतीय परम्पराओं और आदर्शों की जीत है। अदालत ने समलैंगिक जोड़े को बच्चे गोद लेने का हक देने से भी इंकार किया है। देश की सर्वोच्च अदालत का फैसला भारतीय जन भावनाओं एवं संस्कारों की पुष्टि तो करता ही है, साथ ही भारतीय मूल्यों, संस्कृति एवं आदर्शों को आहत करने वाली विदेशी ताकतों को चेतावनी भी है, जो भारत का सामाजिक एवं पारिवारिक चरित्र बिगाड़ने की साजिश में सक्रिय हैं। अदालत का फैसला भारतीय जीवनशैली और अतीत से चली आ रही विवाह परम्परा एवं संस्कृति को जीवंत बनाये रखने की दिशा में सराहनीय कदम है। अदालत ने यह साफ कर दिया है कि न्यायालय कानून नहीं बना सकता, बल्कि उनकी व्याख्या कर सकता है। विशेष विवाह कानून में बदलाव करना संसद का काम है। न्यायमूर्तियों ने यह स्वीकार किया है कि समलैंगिक सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों के एक नागरिक होने के नाते जो अधिकार हैं, वे उन्हें मिलने चाहिए, परंतु जहां तक उनके आपस में ही शादी करने का मामला है तो यह विषय संसद में बैठे जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों को देखना चाहिए। वैसे जो लोग समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता दिये जाने के पक्ष में खड़े थे, या अब भी खड़े हैं, उन्हें समझना चाहिए कि सनातन हिन्दू धर्म में वैवाहिक संबंध दो विपरीत लिंगी लोगों के बीच एक सामाजिक या धार्मिक मान्यता प्राप्त मिलन है। सृष्टि में नवसृजन के लिये विपरीत लिंग का मिलन ही प्रकृति है। अंधानुकरण के नाम पर हम अपनी संस्कृति एवं परम्परा की अनदेखी नहीं कर सकते। हमारे सभी देवी-देवता भी सफल गृहस्थ जीवन के उदाहरण हैं। हिन्दू धर्म में विवाह को मानव-समाज की अत्यंत महत्वपूर्ण इकाई के रूप में मान्यता है। यह समाज का निर्माण करने वाली इकाई या परिवार का मूल है। विवाह केवल यौन सुख भोगने का एक अवसर नहीं, बल्कि वंश परम्परा को आगे बढ़ाने का माध्यम है। भारतीय परम्परा एवं संस्कृति में विवाह द्वारा शारीरिक संबंधों को संयमित रखने, संतति निर्माण करने, उनका उचित पोषण करने, वंश परंपरा को आगे बढ़ाने और अपनी संतति को समाज के लिए उपयोगी नागरिक बनाने जैसे जिम्मेदारी भरे कार्य भी किये जाते हैं। जबकि, समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने का अर्थ भारतीय आदर्शों एवं मूल्यों पर कुठाराघात करना होगा। वस्तुतः देश में समलैंगिक विवाह को लेकर दो तरह की धारणाएं रही हैं। एक बड़ा वर्ग इसे कानूनी और सामाजिक-धार्मिक स्तर पर मान्यता देने का विरोधी रहा है, क्योंकि भारतीय समाज में इस तरह की स्वच्छंद, उच्छृंखल एवं स्वेच्छाचारी जीवन शैली की अनुमति कहीं नहीं है। जबकि, कुछ गिने-चुने लोग समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने के पक्षधर भी हो सकते हैं। अब अदालत ने यह मुद्दा संसद के हवाले कर दिया है। लेकिन, संसद को भारतीय परम्परा एवं सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान जरूर करना चाहिए। केन्द्र की वर्तमान सरकार का रुख इस दिशा में सकारात्मक रहा है। केन्द्र सरकार ने अदालत में समलैंगिक विवाह को मान्यता देने का विरोध किया है। इसलिए यह उम्मीद जरूर की जा सकती है कि इस पर कोई भी कानून बनाने से पहले जनभावनाओं और सामाजिक-धार्मिक मान्यताओं का ध्यान अवश्य रखा जाएगा। क्योंकि, भारत विविधता में एकता वाला देश है। लगभग सभी धर्म एवं सम्प्रदायों में समलैंगिक विवाहों को लेकर विरोध है। आखिर एक स्त्री का दूसरी स्त्री से, एक पुरुष का दूसरे पुरुष से विवाह कैसे उचित माना जा सकता है? ऐसे में केन्द्र सरकार द्वारा अदालत में समलैंगिक विवाह को मान्यता देने का विरोध किया जाना सराहनीय है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

मौज-मस्ती और सिसकती ममता

ज़िंदगी और उम्मीदों को तिलांजलि आखिर कब तक?

– दीपक झा –

'पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा, बेटा हमारा ऐसा काम करेगा...' आमिर खान अभिनीत 'कयामत से कयामत तक' फिल्म का यह गीत हर एक पिता के सपने से जुड़ा है। हर मां-बाप का सपना होता है कि उनकी संतान कुछ ऐसा करे, जिससे उनका, उनके परिवार, गांव और शहर का मान बढ़े। घर के चिराग से यह अपेक्षा स्वाभाविक है। बच्चे अच्छा बनें, अच्छा करें, इसी सोच के साथ गरीब से गरीब माता-पिता भी उनकी परवरिश में यथासामर्थ्य कोई कमी नहीं छोड़ते। एक बच्चे के जन्म से लेकर उसके स्कूल में दाखिले और कॉलेज तक की पढ़ाई सही तरीके से कराने में वे हर संभव हर कोशिश करते ही हैं। लेकिन, वही संतान जब तथाकथित आधुनिकता और स्वच्छंदता की आड़ में मां की ममता, पिता के स्नेह और पूरे परिवार की उम्मीदों को तिलांजलि दे देता है, तो एक अभिभावक के लिए इससे बड़ा कुठाराघात शायद कुछ नहीं। और, वह पल एक मां-बाप के लिए कयामत से कम नहीं होता।

झारखंड के हजारीबाग स्थित लोटवा डैम में प्राण गंवाने वाले बच्चों के माता-पिता को भी यही उम्मीद थी। कोई अपने घर का इकलौता चिराग था, तो कोई पूरे परिवार का राजदुलारा। मां ने अपनी नींद, अपने सुख को त्यागकर सुबह-सुबह उठकर बड़े ही जतन से उसके लिए नाश्ता तैयार किया। उसके स्कूल ड्रेस, बैग, टिफिन आदि तैयार कर उसे दिए। रोज सुबह एक मां की यही ड्यूटी लगी होती है। इसके पीछे एक सपना होता है कि कल उनका बेटा पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनेगा, बड़ा नाम करेगा और पूरे परिवार का सहारा बनेगा। बैग लेकर बेटा भी माता-पिता को 'बाय' कहकर स्कूल जाने की बात कहकर निकल जाता है, लेकिन उन्हें क्या पता कि उनका बेटा कहां गया।

वस्तुतः, आज रील्स वाले इस दौर में रीयल लाइफ चौपट होता जा रहा है। मौज-मस्ती, दोस्ती-यारी और फ्रीडम के नाम पर बच्चे मां-बाप की भावनाओं की कद्र भूल जाते हैं। आए दिन एक संतान द्वारा अपने माता-पिता के साथ बर्बरता की खबरें सुर्खियां बन जाती हैं। अब इससे बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण, अनर्थ और रिश्ते के लिए शर्मनाक और क्या हो सकता है? बच्चे जब हाथ से बेहाथ हो जाते हैं, तो नतीजा दुर्भाग्यपूर्ण ही होता है। हजारीबाग के लोटवा डैम में डूबने वाले सभी छह बच्चों के माता-पिता को भी एक आस थी। वे निश्चिंत थे कि उनके बच्चे स्कूल ही जाते हैं, पढ़ते हैं, लिखते हैं। स्वाभाविक है। अब वे बेचारे भला क्या जानें कि सच्चाई कुछ और ही थी। जो

बैग मां ने स्कूल जाते समय उसके कंधे पर ठीक करते हुए टांग दिया था, वो उनके लिए क्रूज बैग बन गए और जो टिफिन थी, वह आपस में पार्टी करने का फूड आइटम। बच्चे घर से तो स्कूल जाने की बात कहकर निकलते थे, लेकिन तथाकथित दोस्ती-यारी के चक्कर में पड़कर वे रोज बाइक से स्कूल की बजाय सैर को निकल जाया करते थे। ऐसा लोटवा डैम के मृतकों के दोस्तों ने बताया। राहुल व अन्य ने कहा कि जो डैम में डूब गए थे, उनकी आपस में गहरी दोस्ती थी। वे अक्सर स्कूल छोड़ मोटरसाइकिल से घूमने जाया करते थे। घटना से 10 दिन पहले वे लोग टाटीझरिया इलाके के लारा डैम घूमने गए थे। घटना के दिन भी ऐसा ही कुछ हुआ। हजारीबाग के कन्हरी रोड स्थित माउंट एगमाउंट स्कूल की 12वीं कक्षा में पढ़ने वाले सात विद्यार्थी बाइक पर सवार होकर घर से स्कूल जाने की बात कहकर निकले और चले गए लोटवा डैम। वहीं डैम में उन्होंने नहाने की योजना बनाई। स्कूल ड्रेस और किताबें किनारे पर छोड़ वे डैम में उतर गए। उनमें से दो बच्चे नहाते-नहाते आगे गहरे पानी में चले गए। उन्हें डूबता देख बाकी चार छात्र भी उनको बचाने के लिए गहरे पानी में चले गए और देखते-देखते सभी छह के छह विद्यार्थी पानी में समाकर मौत की नींद सो गए। सातवां छात्र सोनू किसी भी तरह अपनी जान बचाकर निकला और शोर मचाने लगा। बाद में काफी मशक्कत से प्रशासनिक सहयोग से गोताखोरों द्वारा सभी के शव बाहर निकाले जा सके।

लोटवा डैम के किनारे मृत बच्चों की माताओं की स्थिति हृदयविदारक थी। वहां कोहराम मचा था। जिस बैग को उन्होंने अपने बेटे की पीठ पर अपने हाथों से टांगा था, जिस कमीज को साफ कर उस पर इस्त्री की थी, उन पर लोट-लोटकर उनका कारुणिक चीत्कार करना वहां मौजूद हर किसी के लिए हृदयभेदी था। जिन बच्चों ने जान गंवाई, उनमें शिव सागर अपने घर का इकलौता चिराग था। वह अपनी नानी के यहां रहकर पढ़ाई किया करता था। इसी प्रकार, मयंक सिंह के माता-पिता के आंसू भी नहीं रुक रहे थे। मयंक के पिता अशोक सिंह अपनी पत्नी यानि मयंक की मां का इलाज कराने के लिए दिल्ली गए थे। घटना वाले दिन ही वे वापस लौटे। रांची एयरपोर्ट पहुंचे ही थे कि उन्हें उनके बेटे की डैम में डूबने की मनहूस खबर मिली। उसकी बीमार मां का कष्ट उस समय असीमित हो गया, जब उनके सामने मयंक का हंसता चेहरा नहीं, उसका शव था।

दरअसल, जिस दोस्ती की दुहाई देकर ये बच्चे मौत की नींद सो गए, उसे किसी भी कीमत पर दोस्ती नहीं कहा जा सकता। दोस्ती आज अधिकतर महज मौज-मस्ती और स्वार्थपूर्ति तक ही सीमित रह गई है। दोस्ती की परिभाषा उन्हें कृष्ण और सुदामा से सीखनी चाहिए, जिसमें न कोई स्वार्थ था, न कोई छल और न ही मां-बाप का तिरस्कार करने की कोई भावना। अपनी जिद और करनी के कारण ये बच्चे न केवल अपनी जान गंवा रहे हैं, बल्कि खुद के साथ-साथ कई जिंदगियां लील रहे हैं। वे उस सपने का भी कत्ल कर रहे हैं, जो उनके माता-पिता ने उनके लिए संजो रखे थे। उस ममता का भी गला घोंट रहे हैं, जो उसकी मां ने देखे थे। उस स्नेह की हत्या कर रहे हैं, जो उसके पिता के हृदय में समाया था।

आज आवश्यकता इस बात की है कि इस उद्दंड, शरारत पर नियंत्रण के लिए विद्यालय स्तर से भी सख्त कार्रवाई हो। हालांकि, उक्त घटना के बाद क्लास में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के बारे में सीधे उनके अभिभावकों को सूचित करने की मांग तेज हो गई है। दूसरी तरफ, परिवार में भी शुरू से ही बच्चों को संस्कारवान और मूल्यवान बनाए जाने की आवश्यकता है। सामूहिक परिवार में रहकर बच्चे जो सीखते हैं, वह न्यूक्लियर फैमिली में कदापि नहीं सीख सकते। आज माता-पिता अपने-अपने काम में व्यस्त रहते हैं और बच्चों पर ध्यान देने वाला कोई नहीं। पहले ऐसी बात नहीं थी। बच्चों की गलती पर कोई और उन्हें डांटता था, पीटता भी था, तो उसे पुचकारने वाला भी उसी परिवार में होता था। इससे एक संतुलित, मूल्यवान, चरित्रवान और संस्कारवान व्यक्तित्व लेकर एक बच्चा तैयार होता था। आज दुर्भाग्यवश ऐसी स्थिति नहीं रही। बहरहाल, अब भी समय है। इस दिशा में सभी को मिलकर कदम बढ़ाना चाहिए, नहीं तो इसी प्रकार हमारे नौनिहाल असमय मौत की आगोश में समाते रहेंगे और मां का आंचल यूं ही आंसुओं से लथपथ होता रहेगा। ***(लेखक एक स्वतंत्र पत्रकार हैं।)***

वो कंधा कहाँ से लाऊँ

हिन्दी कविता

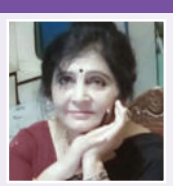

– डॉ.सविता मिश्रा 'मागधी', (बेंगलुरू)

वो कंधा कहाँ से लाऊँ
जिस पे सिर टिका
मन की कसक बहाऊँ
उमड़ते-घुमड़ते नैन बदरिया के
खारे पानी को बरसाऊँ
न जग से कोई शिकवा-शिकायत
न ही किसी की, कोई इनायत
अंतर बैन किसे सुनाऊँ
वो कंधा कहाँ से लाऊँ...

राह कठिन है और है
तम का पहरा
जित देखूँ तित सहरा ही सहरा
उस पर वाचाल अधर
देते घाव गहरा
जेठ की दुपहरिया में
जग छीने ठंडी छाँव
भँवर में फँसी छिद्रित नाव
निरखे वैरी, लगा दाँव
शोलों पर दौड़ रहे पाँव
पाँव के छाले किसे दिखाऊँ
वो कंधा कहाँ से लाऊँ
जिस पर सिर टिका
मन की कसक बहाऊँ।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै-नमस्तस्यै-नमस्तस्यै नमो नमः...

शक्ति की भक्ति में लीन हुई इस्पातनगरी

संवाददाता
बोकारो : आदिशक्ति देवी दुर्गा की आराधना के महापर्व नवरात्रि का उमंग हर तरफ छाया हुआ है। बोकारो, चास सहित आसपास का पूरा वातावरण भक्तिमय बना है। लोग शक्ति की भक्ति में लीन हैं और चारों तरफ का माहौल शंख, घड़ी-घंटा की ध्वनि व वैदिक मंत्रोच्चार से गुंजरित हो रहा है। षष्ठी को जहां बंग भारती, कालीबाड़ी व चक्की मोड़ सहित बांग्ला पद्धति वाले पूजा पंडालों के पट खुल गए, वहीं सप्तमी को नवपत्रिका प्रवेश के साथ सभी जगहों के पंडालों के पट खुल गए।

इसके साथ ही मां दुर्गा के दर्शन को श्रद्धालुओं का तांता लगना शुरू हो गया। सेक्टर-2, सेक्टर- 12, 9 व 4 के विभिन्न पूजा पंडालों, सेक्टर- 2डी स्थित श्यामा माई मंदिर सहित सभी जगहों पर भक्त जुटने लगे और माहौल भक्तिमय बन गया। आकर्षक पंडाल और मेले लोगों को लुभा रहे हैं। सेक्टर-4 में प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ओर से हर साल लगने वाली चैतन्य देवियों की झांकी इस बार भी आकर्षक बनी है।

जहां नारी का सम्मान, वहीं देवताओं का स्थान : . हेमलता

डीपीएस चास में विद्यार्थियों ने मां दुर्गा शीर्षक पर कविताएं व भजन प्रस्तुत किए। मनमोहक सामूहिक नृत्य से सभी को थिरकने पर विवश कर दिया। स्कूल की चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस. मोहन ने कहा कि जहां महिलाओं का सम्मान होता है, वहीं देवताओं का निवास होता है। विद्यालय निदेशक नवीन कुमार शर्मा, कार्यवाहक प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे ने भी नवरात्रि को देवी पूजन के साथ नारी शक्ति को समझने एवं उसका सम्मान करने का संदेश दिया।

विद्यालयों में भी नवरात्रि की धूम, कई कार्यक्रम आयोजित

डीपीएस बोकारो में नवदुर्गा स्वरूपों से बच्चों ने लुभाया

इसी कड़ी में स्थानीय विद्यालयों में भी नवरात्रि की धूम मची रही। विभिन्न विद्यालयों में नवरात्रि के अवसर पर विशेष प्रार्थना सभाएं आयोजित की गईं। बच्चों ने भांति-भांति के सांस्कृतिक कार्यक्रमों से खूब लुभाया। डीपीएस बोकारो में कक्षा 3 से 5वीं के छात्र-छात्राओं ने देवी दुर्गा के सुमधुर भजनों के अलावा गरबा व डांडिया नृत्य तथा देवी दुर्गा के नौ रूपों पर आधारित प्रस्तुति से खूब आकर्षित किया। रंग-बिरंगे परिधानों में सजे नन्हें विद्यार्थियों की रूप-सज्जा, भाव-भंगिमा, अदाकारी आदि उनकी कुशल प्रतिभा को प्रतिबिंबित कर रही थी। विद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए एस गंगवार ने सभी को नवरात्रि की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस तरह का आयोजन बच्चों में कलात्मक प्रतिभा का निखार लाने के साथ-साथ उन्हें अपनी परंपरा-संस्कृति से भी जोड़े रखने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

असत्य के खिलाफ लड़ना सिखाती हैं मां जगदंबा : त्रिपाठी

स्थानीय चिन्मय विद्यालय में 11वीं एवं 12वीं की छात्र-छात्राओं ने मां दुर्गा-स्तुति का पाठ किया, तो नर्सरी से द्वितीय कक्षा तक के छात्र-छात्राओं ने मां दुर्गा की नौ रूपों का वेश धारण सभी को मोहित कर दिया। मौके पर विद्यालय के सचिव महेश त्रिपाठी एवं प्राचार्य सूरज शर्मा ने उपस्थित सभी विद्यार्थियों को नवरात्रि की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मां दुर्गा हमें जीवन में सत्य के साथ जीना, असत्य के खिलाफ लड़ना एवं हमेशा अनुशासन में रहना सिखाती है। विद्यालय अध्यक्ष बिश्वरूप मुखोपाध्याय एवं चिन्मय मिशन की आवासीय आचार्या स्वामिनी संयुक्तानंद सरस्वती ने विद्यालय के सभी विद्यार्थियों, उनके अभिभावको, सभी शिक्षक-शिक्षिकाओ एवं सभी कर्मचारियों को दुर्गोत्सव की शुभकामनाएं दीं।

मनमानी बगैर पार्किंग क्षेत्र चिह्नित किए ही पुलिस काट रही चालान, एसपी से कार्रवाई की मांग

पार्किंग क्षेत्र का नहीं ठिकाना, फिर भी ऐंठ रहे जुर्माना

संवाददाता
बोकारो : बोकारो के मुख्य व्यावसायिक बाजार चास में विगत कई दिनों से यातायात समस्या जटिल बनी हुई है। इसकी जटिलता में परेशानी का और इजाफा कर दिया है ट्रैफिक पुलिस ने। नगर निगम की ओर से बगैर पार्किंग क्षेत्र घोषित किए ही पुलिस वाहन मालिकों का जबरन चालान काट रही है। इस मनमानी के खिलाफ बोकारो चैंबर आफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज ने पहल करते हुए एसपी प्रियदर्शी आलोक से मिलकर कार्रवाई की मांग की है। चैंबर का एक प्रतिनिधिमंडल अध्यक्ष प्रदीप सिंह के नेतृत्व में विभिन्न समस्याओं को लेकर पुलिस अधीक्षक से पुलिस लाइन में मिला। प्रदीप सिंह ने पुलिस अधीक्षक को बताया कि पूरे चास में बराबर जाम की स्थिति बनी रहती है, जरूरत है यातायात को सुचारू एवं व्यवस्थित करने की।

प्रदीप ने कहा कि जाम रहने के कारण चास आने से लोग कतराने लगे हैं। संरक्षक संजय बैद ने पुलिस अधीक्षक का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि यातायात पुलिस बाजार में आने वाले ग्राहकों को पार्किंग के नाम पर जुर्माना लग रहा है, जबकि पूरे चास में नगर निगम द्वारा कहीं भी पार्किंग क्षेत्र चिह्नित नहीं किया गया है। बैद ने कहा - नगर निगम द्वारा सड़क के किनारे लगे पेवर ब्लॉक भी बिना योजना के हटा दिया है, जिससे ग्राहकों को अपने वाहन खड़े करने में बहुत परेशानी का सामना करना पड़ रहा है और वे सड़क पर वाहन लगाने को विवश हैं। चैंबर ने आग्रह किया कि पूजा तक पार्किंग के नाम पर जुर्माना न वसूला जाए और सक्षम प्राधिकार को पार्किंग क्षेत्र विकसित करने के लिए लिखा जाए।

नगर निगम का निर्णय अव्यावहारिक : चौधरी

पूर्व अध्यक्ष मनोज चौधरी ने कहा कि नगर निगम के अव्यवहारिक निर्णय के कारण पूरे चास का यातायात एवं आवागमन बाधित हो रहा है। चौधरी ने कहा यातायात पुलिस द्वारा जुर्माना वसूलने के कारण लोगों को मानसिक तथा आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। चेंबर के महामंत्री सिद्धार्थ पारख ने पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपते हुए मांग यातायात पुलिस द्वारा पार्किंग के नाम पर वसूले जा रहे जुमने पर रोक लगाने की मांग की। पारख ने कहा कि इसका बेहद नकारात्मक असर चास के व्यवसाय पर पड़ रहा है। पुलिस अधीक्षक प्रियदर्शी आलोक ने चेंबर प्रतिनिधिमंडल की बातों को गंभीरता से लेते हुए कहा कि वह इस विषय पर सकारात्मक पहल करेंगे। साथ ही उन्होंने लोगों से अपील की कि वे वाहनों को इस प्रकार लगाएं कि आमलोगों को परेशानी न हो। प्रतिनिधिमंडल में अध्यक्ष प्रदीप सिंह, संजय बैद, मनोज चौधरी, नरेंद्र सिंह और सिद्धार्थ पारख आदि शामिल थे।

वर्ष 1971 से हो रही है मानगो-तांतरी की दुगार्पूजा, लोगों की जुड़ी है अगाध आस्था

मुन्ना दुबे
बोकारो : बोकारो के मानगो-तांतरी की दुगार्पूजा का भी पांच दशक से अधिक का पुराना इतिहास रहा है। यहां की पूजा अपने-आप में विशेष होती है और भक्तों की अगाध आस्था भी यहां से जुड़ी है। चास प्रखंड की मानगो पंचायत अंतर्गत केवट टोला के रहने वाले डॉ कामिनी भट्टाचार्य ने अपने ही घर पर विधिवत कलश स्थापित कर वर्ष 1971 में मां दुर्गा पूजनोत्सव की शुरूआत की थी, लेकिन अचानक 1972 में सड़क दुर्घटना में उनका देहांत हो गया। इस वजह से पूजा नहीं हो सकी। ऐसे में मानगो के तत्कालीन मुखिया रामाधार सिंह, तांतरी के प्रमुख उपेंद्र नाथ मिश्रा, सरपंच प्रद्युम्न मिश्रा, सुशील मिश्रा, कामेश्वरी मिश्रा, हरेंनचंद्र भट्टाचार्य, खगेंद्र भट्टाचार्य, हरभजू केवट, झरी केवट, धनेश्वर मल्लाह आदि ने बैठक कर दुगापूजा करने का निर्णय लिया।

तत्कालीन मुखिया रामाधार सिंह ने मानगो-तांतरी सीमा पर स्थित अपनी रैयती भूमि मंदिर के नाम दान दी। सभी ने मिलकर 1973 में तिरपाल लगाकर प्रतिमा स्थापित कर विधिवत दुगार्पूजा की शुरूआत की। 1977 में सीमेंट वाले मंदिर के नाम एक कमरा बनाकर बनाया गया। लेकिन, समय के साथ जर्जर होने के कारण 2005 में उसे तोड़कर नए सिरे से मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ, जो 2009 में पूर्ण रूपेण भव्य मंदिर के रूप में बनकर तैयार हो गया। सर्वप्रथम पुजारी के रूप में जैनामोड़ के रहने वाले पंडित वकील तिवारी यहां के सारे अनुष्ठान करवाया करते थे। बाद में उनके पुत्र निखिल चंद्र तिवारी ने 2016 तक पूजा-पाठ किया। फिलहाल मंदिर में हर धार्मिक अनुष्ठान तांतरी के पुजारी कृष्ण मुरारी पांडेय व आचार्य उज्जवल भट्टाचार्य करते आ रहे हैं। इस वर्ष भी दुगार्पूजनोत्सव सफलतापूर्वक संपन्न करवाने के लिए श्रद्धालु जुटे हैं।

मां, माटी और मातृभूमि का अनुकरण कर भारत को पुनः बनाएं विश्वगुरु : सांसद

संवाददाता

बोकारो : सेक्टर-3सी स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में दो-दिवसीय प्रांतीय संस्कृति महोत्सव सह- प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। समापन सत्र के कार्यक्रम का उद्घाटन धनबाद संसदीय क्षेत्र के सांसद पशुपतिनाथ सिंह, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के मंत्री ब्रह्माजी राव, विद्या विकास समिति, झारखंड प्रांत के प्रदेश सचिव अजय कुमार तिवारी ने संयुक्त रूप से किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सांसद श्री सिंह ने कहा कि विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ संस्कार देने का कार्य विद्या भारती के विद्यालय कर रहे हैं। आयोजन को सराहते हुए उन्होंने कहा कि पूर्वजों की शिक्षा और ज्ञान पद्धति के कारण ही हम हजारों वर्षों की गुलामी के बाद भी अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण रखने में कामयाब हुए हैं। एक समय वह था, जब आर्यभट्ट ने बिहार की धरती तरेगना से बैठकर तारों की सटीक गणना की थी। उसी सिद्धांत को अपनाते हुए हमारे वैज्ञानिकों ने आज चांद के दक्षिणी ध्रुव पर अपना परचम लहराया है, जिसका लोहा आज पूरा विश्व मान रहा है। परंतु, आज समाज को बांटने के लिए बहुत से विरोधी तत्व घूम रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है हम अपनी मां, मातृभूमि और मातृभाषा को लेकर आगे बढ़ें और भारत को पुनः विश्वपटल पर विश्व गुरु बनाएं।

संस्कृति-बोध से होगा सर्वांगीण विकास : राव

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता ब्रह्मा जी राव नेकहा कि विद्या भारती के विद्यालयों में समान बोध, देशात्म बोध, संस्कृति बोध और अध्यात्म बोध के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जाता है। जब वे सभी को एक समान समझेंगे, तभी उनके अंदर देशात्म बोध आएगा और वे राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हुए देश हित में कार्य करेंगे। विद्या विकास समिति झारखंड प्रांत के प्रदेश सचिव अजय कुमार तिवारी ने कहा कि आज पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के द्वारा हमारे नौनिहालों में जो बीजारोपण हो रहा है और उनमें बुजुर्गों के प्रति सम्मान भाव कम होने लगा है, उस विकृति को हम दूर करने का प्रयास कर रहे हैं। कार्यक्रम में पूरे झारखंड प्रांत के आठ विभागों से कुल 1027 भैया-बहन और 117 आचार्य एवं दीदी उपस्थित हुए। इस कार्यक्रम में संस्कृत, संस्कृति बोध, विज्ञान, वैदिक गणित, अंग्रेजी और संगणक प्रश्न मंच प्रतियोगिता के साथ-साथ कथा कथन, आशु भाषण, आचार्य पत्र वाचन, मूर्ति कला प्रतियोगिता और लोक नृत्य प्रदर्शन चार वर्गों में हुआ। इस अवसर पर अखिलेश कुमार, विवेक नयन पाण्डेय, नीरज कुमार लाल, ओमप्रकाश सिन्हा, राजेश प्रसाद, तुलसी प्रसाद ठाकुर, बीरेंद्र कुमार टुडू, रमेश कुमार, सुखनंदन सिंह सदय, शिवकुमार सिंह, ए.के.वर्मा, अमित कुमार, सिद्धेश नारायण दास, रण सुमन सिंह आदि उपस्थित रहे।

बीडीओ-सीओ को क्षेत्र की समस्याओं से कराया अवगत

संवाददाता

गोमिया : गोमिया प्रखण्ड की बड़की सीधावारा पंचायत की पंचायत समिति सदस्य रेखा देवी एवं समाजसेवी विनोद कुमार ने गोमिया प्रखण्ड के नवपदस्थापित बीडीओ महादेव कुमार महतो एवं सीओ प्रदीप कुमार महतो का स्वागत पुष्पगुच्छ भेंटकर किया। पंचायत समिति सदस्य रेखा ने उन्हें बड़की सीधावारा पंचायत की समस्याओं से अवगत कराते हुए निदान की मांग की। अधिकारीद्वय ने अपनी ओर से समस्याओं के समाधान हेतु हरसंभव प्रयास का भरोसा दिलाया। कहा कि विकास में कोई कमी नहीं होने दी जाएगी।

कार्यक्रम जीजीईएसटी में विद्यार्थियों को उद्यमिता विकास पर दिया गया प्रशिक्षण

बड़े पैमाने पर रोजगार-सृजन से देश विकास में अहम भूमिका निभा रहे व्यवसाय व उद्यम : जरूहार

संवाददाता

बोकारो : कांड्रा स्थित गुरु गोबिंद सिंह एजुकेशनल सोसायटीज टेक्निकल कैंपस, बोकारो में उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता गौरव कुमार, सहायक निदेशक, लघु सूक्ष्म मध्यम उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार ने कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

कालेज निदेशक डॉ. प्रियदर्शी जरुहार ने छात्रों, विशेषतः बी.टेक., बीबीए, बीसीए तथा एमबीए के छात्रों को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि देश के विकास में व्यवसाय और उद्यमों

की प्रमुख भूमिका है, क्योंकि वे बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न करते हैं। मुख्य वक्ता गौरव ने प्रतिभागियों को उद्यम पंजीकरण एवं पीएम विश्वकर्मा योजना के बारे में विस्तार से बताया। उनके प्रश्नों का जवाब देकर उनकी जिज्ञासाएं भी शांत कीं। उन्होंने भावी उद्यमियों को इस योजना का अधिक से अधिक लाभ लेने का आह्वान किया।

राजेश महतो, आईईओ, डीआईसी, बोकारो ने झारखंड सरकार ने उद्यमियों के विकास हेतु उपलब्ध योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। प्रबंधक, यूनियन बैंक आफ इंडिया, कांड्रा ने उद्यमियों के विकास हेतु उपलब्ध ऋण सुविधाओं, आवेदन की प्रक्रिया एवं आवश्यक दस्तावेजों के बारे में बताया। कुंदन उपाध्याय, प्रदेश अध्यक्ष - जे.एस.आई.बी.आई.ए. ने एक सफल उद्यमी बनने के लिए उन्होंने सभी प्रतिभागियों को स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया। प्रो. अपूर्वा सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में 150 छात्र व प्राध्यापक तथा चास एवं बोकारो के 15 उद्यमियों ने भाग लिया। प्रो. दयानंद दिवाकर, प्रो. सुमित कुमार एवं डॉ. ए. पी. बर्णवाल ने कार्यक्रम का समन्वयन और संयोजन किया। अनिल सिंह के तकनीकी योगदान दिया। संस्थान अध्यक्ष तरसेम सिंह एवं सचिव सुरेंद्र पाल सिंह ने बधाई व शुभकामनाएं दीं।

हफ्ते की हलचल

जरीडीह बाजार में भव्य कलश-यात्रा निकाली गई

बोकारो : जिले के जरीडीह बाजार स्थित दुर्गा मंदिर से 351 कलश के साथ कलशयात्रा निकाली गई। जारंगडीह स्टेशन के समीप तालाब पहुंचकर पुजारी शिवकुमार पंडित ने विधिवत पूजा-अर्चना की। श्रद्धालु कलश में जल भरकर मंदिर पहुंचे और कलश को स्थापित किया गया। पूजन के बाद माता का पट खुला। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से अनिल अग्रवाल, अजीत साव, शिव शंकर सोनी, अजय भगत, विनोद चौरसिया, अश्विनी सोनी, मुकेश सिन्हा, अनूप साव, रजत, गुड्डू, सोनी, निकेश साव, करण भाटिया, कन्हैया यादव, आनंद, सोनी, राहुल, मुकेश शाह, सुनील श्रीवास्तव सहित सैकड़ों श्रद्धालु शामिल रहे। वहीं माता का पट खुलते ही दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का तांता लग गया।

रोटरी बोकारो का गरबा-डांडिया नाइट आयोजित

बोकारो : नवरात्रि के अवसर पर रोटरी बोकारो की महिला समिति द्वारा डांडिया सह गरबा नाइट का एक रंगारंग कार्यक्रम क्लब के सभागार किया गया। क्लब की सभी महिलाएं एवं पुरुष सदस्य रंग-बिरंगे वस्त्रों में सज-धजकर इसमें शामिल हुए। अध्यक्ष रोटेरियन घनश्याम दास ने सभी सदस्यों और अतिथियों का स्वागत किया और सभी को दुर्गा पूजा की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम की शुरूआत महिला सदस्यों द्वारा दीप प्रज्वलित एवं रो. पूनम त्रेहन की जय माता दी के उदघोष के साथ हुई। सभी ने माता के भजन एवं गीतों की धुन पर नृत्य किया और गरबा एवं डांडिया नृत्य का आनंद उठाया। 'श्रेष्ठ परिधान युगल' का पुरस्कार चंद्रिमा रे एवं प्रदीप रे को दिया गया। ढाकियों की ढाप एवं मन्नू श्रीवास्तव के धुनुची नृत्य ने सब का मन मोह लिया। आयोजन की सफलता में नमिता एवं मन्नू श्रीवास्तव की भी अहम भूमिका रही।

बीएसएल में सड़क सुरक्षा जागरूकता सप्ताह संपन्न

बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट के कोक ओवन विभाग में सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया गया। सप्ताहव्यापी इस कार्यक्रम में कोक ओवन विभाग के लगभग 400 कर्मचारियों को सड़क सुरक्षा के प्रति प्रशिक्षित किया गया। साथ ही लगभग 200 कर्मचारियों को सेफ़्टी कंसल्टेंट एएसके ईएचएस की टीम के सदस्य आर एन विश्वास, विभागीय महाप्रबंधक शिव शंकर, सहायक महाप्रबंधक, पीयूष आनंद, सहायक महाप्रबंधक, गिरीश रंजन, वरीय प्रबंधक के नेतृत्व में संयंत्र के अंदर यातायात के समय सड़क सुरक्षा के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई गई। शनिवार को कोक ओवन विभाग के मानव संसाधन सभागार में सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य महाप्रबंधक (सुरक्षा एवं अग्निशमन सेवा) बिपिन कृष्ण सरतपे, कार्यकारी मुख्य महाप्रबंधक (सीओ एंड सीसी) पी एस कुमार, अन्य वरीय अधिकारी तथा कर्मचारीगण शामिल थे।

रोटरी चास का गरबा-डांडिया कार्यक्रम आयोजित

बोकारो : रोटरी क्लब चास की ओर से रोटरी भवन चीरा चास में नवरात्रि के अवसर पर गरबा एवं डांडिया कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत डॉ. परिंदा सिंह ने मां की भगवती की स्तुति से की। चास रोटरी की अध्यक्ष पूजा बैद ने आगुन्तकों का स्वागत करते हुए कहा कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से जुड़ाव बना रहे, इसका प्रयास किया जा रहा है। डॉ. परिंदा सिंह ने कहा कि गरबा अब केवल गुजरात का लोक नृत्य नहीं रह गया है। सोनल रस्तोगी द्वारा बनाई गई बेहद सुंदर रंगोली के चारों तरफ रोटरी क्लब चास, रोटरी क्लब बोकारो तथा रोटरी क्लब मिडटाउन कपल के सदस्यों ने सामूहिक रूप से माता जी के भजन पर गाए और नृत्य किए। संचालन विपिन अग्रवाल ने किया। मौके पर रोटरी चास की सचिव डिंपल कौर, अर्चना सिंह, शैल रस्तोगी, रंभा सिंह, डॉ. पुष्पा, माधुरी सिंह, शिवानी तनेजा, सोनल रस्तोगी, राखी चौधरी, आरती पारख, जूली केडिया, प्रतिमा अग्रवाल, कविता मलिक कल्याणी गुप्ता, ब्रेडा टबोड़ा, कैंडी टबोड़ा आदि मौजूद रहीं।

इलेक्ट्रोस्टील पर वन विभाग की पहली जीत, संरक्षित वनभूमि पर दावेदारी को हाईकोर्ट ने किया खारिज

हाईकोर्ट ने क्या पाया

अदालत ने अपनी फाइंडिंग्स में स्पष्ट किया है कि कंपनी द्वारा सरकारी भूमि के एक बड़े हिस्से पर स्वामित्व का दावा किया गया है, जिसे 1958 में संरक्षित वन क्षेत्र के रूप में विधिवत अधिसूचित किया गया था। न्यायालय ने कंपनी की ओर से किये गये दावे को प्रथम दृष्टया टिकाऊ नहीं माना है। न्यायालय ने कहा- प्रथम दृष्टया पता चलता है कि कंपनी का प्रतिनिधित्व करने वाले याचिकाकताओं ने 200 एकड़ से अधिक वन भूमि पर अतिक्रमण किया था और कब्जा कर लिया था और अब मामले को रद्द करके आपराधिक अभियोजन से छूट का दावा कर रहे हैं। जबकि, रद्द करने का ऐसा कोई भी आदेश वन भूमि पर अवैध अतिक्रमण को वैध बना देगा। न्यायालय के इस फैसले से वन विभाग की बड़ी जीत हुई है।

विशेष संवाददाता

रांची/बोकारो : बोकारो जिले के चंदनकियारी प्रखंड अंतर्गत सियालजोरी और भागाबांध इलाके में संचालित इलेक्ट्रोस्टील स्टील्स लिमिटेड (अब वेदांता ईएसएल) से पहली बार वन विभाग ने अपनी जीत दर्ज की है। झारखंड हाईकोर्ट में चल रहे कई मामलों की सुनवाई एक साथ करते हुए उच्च न्यायालय ने इलेक्ट्रोस्टील की ओर से दायर मामलों को निरस्त कर वन विभाग के पक्ष में फैसला सुनाया है। दरअसल, वन विभाग की ओर से वन भूमि के अतिक्रमण को लेकर इलेक्ट्रोस्टील के खिलाफ लगभग चार दर्जन से अधिक मुकदमे दर्ज किये गये थे। इनमें से कई मामलों को न्यायालय ने निरस्त कर दिया था। लेकिन, इलेक्ट्रोस्टील द्वारा वन विभाग के अधिकारियों के विरुद्ध दायर आपराधिक मामलों की सुनवाई एक साथ करते हुए हाईकोर्ट ने वन विभाग के पक्ष में फैसला दिया है। हाईकोर्ट ने सीआर एम.पी नं.-1751/2022, सीआर एम.पी नं.-2829/2022, सीआर एम.पी नं.-3898/2022 की सुनवाई करते हुए 10 अक्टूबर, 2023 को दिये अपने फैसले में इलेक्ट्रो स्टील द्वारा वन विभाग द्वारा सीमांकित एवं अधिसूचित वन भूमि पर कब्जे को अवैध ठहराया है।

दरअसल, वन विभाग ने तीन आपराधिक विविध याचिकाओं (सीपी केस) में जारी समन आदेश सहित संपूर्ण आपराधिक कार्यवाही को रद्द करने के उद्देश्य से हाईकोर्ट में अपील की थी, जहां भारतीय वन अधिनियम, 1927 की धारा 33 और 63 (सी) के तहत प्रथम दृष्टया मामला स्थापित किया गया था। न्यायमूर्ति गौतम कुमार चौधरी की अदालत ने कहा, ''मालिकाना हक कानून द्वारा ज्ञात विधि जैसे विरासत, वसीयतनामा उत्तराधिकार, पंजीकृत बिक्री विलेख या उपहार विलेख द्वारा हस्तांतरित किया जा सकता है, जिसे विशेष रूप से प्रस्तुत करने और साबित करने की आवश्यकता होती है। स्वामित्व की श्रृंखला के साथ-साथ स्वामित्व के स्रोत का निश्चितता के साथ खुलासा किया जाना चाहिए। यह एक घिसा-पिटा कानून है कि कोई भी व्यक्ति अपने से बेहतर पदवी हस्तांतरित नहीं कर सकता।'' कोर्ट ने कहा- जब तक जिस व्यक्ति से स्वामित्व प्राप्त करने का दावा किया जाता है, उसके पास उस पर वैध स्वामित्व नहीं है, तब तक स्वामित्व का हस्तांतरण नहीं हो सकता है। म्यूटेशन और लगान रसीद जारी करने से कोई फायदा नहीं होगा, क्योंकि म्यूटेशन न तो उसके स्वामित्व को बनाता है और न ही समाप्त करता है। केवल स्वामित्व की याचिका दायर करने से अभियोजन से छूट नहीं मिल सकती है, जब तक कि ऐसी याचिका स्वामित्व के दस्तावेज पर आधारित न हो, जिससे ऐसी संपत्ति पर याचिकाकर्ता के अधिकार के रंग के बारे में प्रथम दृष्टया अनुमान लगाया जा सके। इन याचिकाओं में मुख्य प्रश्न यह था कि क्या भारतीय वन अधिनियम, 1927 की धारा 29 के तहत अधिसूचित संरक्षित वन से जुड़े मामले में, वन क्षेत्र पर स्वामित्व का दावा करने वाले निजी व्यक्तियों द्वारा कथित तौर पर अतिक्रमण और कब्जा कर लिया गया था, इसके संज्ञान को रद्द किया जा सकता है। इनमें से दो याचिकाओं में, वन रक्षक की अपराध रिपोर्ट ने वन मामलों की नींव के रूप में कार्य किया। वन रेंज अधिकारी द्वारा प्रस्तुत अभियोजन रिपोर्ट के आधार पर संज्ञान लिया गया। अभियोजन पक्ष का तर्क था कि मौजा सियालजोरी में 71.83 एकड़ के 6 भूखंडों वाले भूमि क्षेत्र को अधिसूचना सी/एफ-17014/58-1429 आर, दिनांक 24.05.1958 द्वारा संरक्षित वन घोषित किया गया था। वन विभाग ने इलेक्ट्रोस्टील कंपनी पर इस संरक्षित वन क्षेत्र पर अतिक्रमण करने, चहारदीवारी का निर्माण करने और इलेक्ट्रो-स्टील इंटीग्रेटेड लिमिटेड और इलेक्ट्रो-स्टील स्टील्स लिमिटेड की विभिन्न इकाइयां स्थापित करने का आरोप लगाया गया था। तीसरी याचिका में मामला एक ही कंपनी द्वारा सड़क के निर्माण के माध्यम से 2 भूखंडों पर अतिक्रमण से जुड़ा था, जिसका दावा उसी अधिसूचना द्वारा निर्दिष्ट संरक्षित वन क्षेत्र के भीतर होने का था। जबकि, कंपनी की ओर से बताया गया कि विचाराधीन भूमि कंपनी द्वारा पंजीकृत बिक्री कार्यों के माध्यम से कानूनी रूप से अर्जित की गई थी और कंपनी के नाम पर विधिवत हस्तांतरित की गई थी।

दूसरी ओर, राज्य का तर्क यह था कि मेसर्स इलेक्ट्रोस्टील स्टील्स लिमिटेड ने बोकारो वन प्रमंडल के अधिकार क्षेत्र के तहत भागाबांध, सियालजोरी, हुटुपाथर और बांधडीह गांवों में लगभग 220 एकड़ अधिसूचित और सीमांकित वन भूमि पर अतिक्रमण किया था। यह अतिक्रमण तब हुआ, जब कंपनी ने स्वीकृत स्थान से भिन्न स्थान, यानी ग्राम पर्वतपुर, ब्लॉक चंदनकियारी, जिला बोकारो में एक स्टील प्लांट स्थापित करने का प्रयास किया। राज्य ने तर्क दिया कि इस कार्रवाई ने पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1927 और वन संरक्षण अधिनियम, 1980 का उल्लंघन किया। इसके अलावा वन विभाग ने 220.88 एकड़ वन भूमि पर अतिक्रमण करने के लिए भारतीय वन अधिनियम की धारा 33 और 63 के तहत मेसर्स इलेक्ट्रोस्टील स्टील्स लिमिटेड के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की। वन अधिकारियों को अधिसूचित और सीमांकित वन भूमि पर कंपनी के कर्मचारियों द्वारा किए गए गैर-वानिकी गतिविधियों, जैसे डोजरिंग, लेवलिंग, खुदाई और निर्माण कार्य के सबूत मिले। वन विभाग ने इस बात पर जोर दिया कि विचाराधीन भूमि सरकारी भूमि थी, जिसे 1958 में भारतीय वन अधिनियम की धारा 29 के तहत वन भूमि के रूप में अधिसूचित किया गया था।

रांची के डॉ. हाजरा को मिली विश्वस्तरीय ख्याति

दिल्ली में 'वर्ल्ड क्लास एक्यूपंक्चर स्पाइन स्पेशलिस्ट' 2023 के सम्मान से नवाजे गए

अरबाज खान, जया प्रदा व अन्य सेलिब्रिटी के हाथों किए गए सम्मानित

विशेष संवाददाता

रांची : झारखंड के सुविख्यात एक्यूपंक्चर एवं स्पाइन विशेषज्ञ डॉ. राजेंद्र कुमार हाजरा की उपलब्धियां में एक और नया आयाम जुड़ गया है। उन्हें एक और विश्वस्तरीय ख्याति मिली है। डॉ. हाजरा वर्ल्ड क्लास एक्यूपंक्चर स्पाइन स्पेशलिस्ट 2023 के सम्मान से नवाजे गए हैं। उत्तर प्रदेश के श्रम एवं सेवायोजन राज्यमंत्री ठाकुर रघुराज सिंह, फिल्म अभिनेत्री जया प्रदा, अभिनेता अरबाज खान और मिस वेनेजुएला ने दिल्ली के हॉलीडे सभागार में उन्हें यह अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया।

डॉ. हाजरा ओल्ड एजी कॉलोनी, रांची में स्पाइन एक्युपंचर क्लिनिक के संचालक हैं। वह विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों से भी जुड़कर लगातार जनसेवा में भी लगे हुए हैं। वह छात्र क्लब चिकित्सक मंच के वरीय संरक्षक भी हैं। उक्त प्रतिष्ठित सम्मान पाकर रांची लौटने पर बिरसा मुंडा हवाई अड्डा पर छात्र क्लब ग्रुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव किशोर शर्मा की अध्यक्षता में उनका जोरदार स्वागत किया गया। मौके पर छात्र क्लब चिकित्सक मंच के डॉ. नंदकिशोर कुमार शर्मा, डॉ. बी के सिंह, राज किशोर राणा, संतोष कुमार, अशोक कुमार राणा, कृष्णा शर्मा आदि मौजूद रहे।

खड़का में दुर्गोत्सव की धूम, उमड़ रहे श्रद्धालु

मिथिला डायरी

बोखड़ा (सीतामढ़ी) : खड़का बसंत में इन दिनों दुर्गोत्सव की धूम मची है। पूरा इलाका दुर्गा सप्तशती के मंत्रोच्चार, मैया की जय-जयकार और भजनों से गूंज रहा है। गांव के दुर्गा स्थान में हर साल की भांति इस बार भी आदिशक्ति जगदम्बा की भव्य मूर्ति स्थापित की गई है। सप्तमी को पट खुलने के साथ ही मैया के दर्शन को भक्तों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। बता दें कि यहां की दुर्गा पूजा की अपने-आप में विशेष महत्ता है। मैया भक्तों की हर मुराद पूरी करती हैं। भक्तों की अगाध आस्था यहां से जुड़ी है। यहां मूर्ति स्थापित करने के लिए देढ़ दशक से भी अधिक समय की पूर्व ही बुकिंग रहती है।

सीओ के रवैये पर उखड़े दुर्गा-स्थान के दुकानदार, हंगामा

बेनीपट्टी : नवरात्रि के समय में जब श्रद्धालुओं का तांता लगा है, ऐसे में दुर्गा-स्थान (उच्चैठ) में काफी हंगामा मचा है। उच्चैठ के दुकानदारों ने वहां की अंचलाधिकारी पल्लवी कुमारी गुप्ता के कथित अमर्यादित व्यवहार को लेकर मोर्चा खोल दिया है। शनिवार को उन्होंने काफी बवाल काटा और सीओ ऑफिस के पास विरोध प्रदर्शन किया। सिद्धपीठ उच्चैठ में मछली गेट से मंदिर के मुख्य गेट तक और मुख्य सड़क की सभी दुकानें बंद कर दुकानदारों और मंदिर के पंडा ने मुख्य सड़क को जाम कर दिया। मंदिर परिसर के मुख्य गेट में ताला जड़ दिया गया। इस कारण सैकड़ों श्रद्धालु मंदिर परिसर में फंसे रहे। दुकानदारों ने सीओ को आधे घंटे तक घेरे रखा। बाद में पुलिस ने उन्हें सुरक्षित अपनी गाड़ी से हाथी गेट पर पहुंचाकर अपनी सुरक्षा में रखा। दुकानदारों का आरोप है कि सीओ तीन-चार दिनों से दुकानदारों को आकर बेवजह तंग कर रही थीं। शनिवार को दिन में करीब ढाई बजे मछली गेट से मंदिर परिसर तक सजी दुकानों के सामान को सीओ फेंकवाने लगीं। आक्रोशित दुकानदारों ने सीओ को घेर लिया। सभी दुकानदारों ने दुकाने बंद कर जाम कर दिया। इससे एक घंटे तक आवगमन बाधित रहा। मंदिर परिसर के मुख्य गेट में ताला मारने से दर्शनार्थी फंसे रहे। सूचना मिलने पर मंदिर के नियंत्रण कक्ष में बैठे पुलिस निरीक्षक सह थानाध्यक्ष पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और लोगों को समझाकर जाम हटाया और मंदिर परिसर का ताला खुलवाया। इधर, सीओ पल्लवी कुमारी गुप्ता ने बताया कि मछली गेट से मुख्य परिसर तक जाने के रास्ते को अस्थायी अतिक्रमण से मुक्त करने का प्रशासनिक निर्णय है। इसी का पालन किया जा रहा है। उन्होंने साजिशन बवाल काटने का आरोप लगाया है। बहरहाल, इस मामले को लेकर खबर लिखे जाने तक तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई थी।

विजयादशमी- शक्ति-जागरण का पर्व

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

शक्ति की सरलतम व्याख्या यह है कि प्रत्येक प्राणी में यह शक्ति विद्यमान रहती है। जिस प्रकार प्रत्येक प्राणी में आत्मा है..., और आत्मा तो सदैव शक्ति से युक्त होती है। नवरात्रि में नौ दिन शक्ति पूजन, शक्ति साधना, मंत्र जप, शक्ति प्राप्त करने की साधना ही नहीं है, अपितु भीतर की शक्तियों को जागृत करने की क्रिया है। यह बात आप जान लो कि ईश्वर के अलावा आपको न कोई शक्ति दे सकता है और न कोई आपसे शक्ति ले सकता है। ... और यह ईश्वर का वरदान है कि मैं प्रत्येक प्राणी को शक्ति से संपन्न करूंगा। इस शक्ति के कारण ही जगत में सभी प्राणी अपना-अपना कर्म करते हैं। जिसका शक्ति तत्व जितना अधिक जागृत होता है, वह अपने छोटे से जीवन में उतनी ही अधिक भौतिक और आध्यात्मिक सफलताएं प्राप्त करता है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि शक्ति सब में है तो सब कोई इसका उपयोग क्यों नहीं करते? इसका कारण है जब व्यक्ति के मन मे कुण्ठा, निराशा, भय, अधैर्य, चिन्ता, अवसाद इत्यादि व्याप्त हो जाते हैं तो उसकी चित्त वृत्तियों पर एक कठोर आवरण आ जाता है और वह अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं कर पाता।

संसार में प्रत्येक व्यक्ति युद्धरत

यह स्पष्ट बात है कि संसार चक्र में प्रत्येक व्यक्ति युद्धरत है। कर्म है तो यह भी युद्ध ही है। कर्म से जीत मिलती है। इसका सीधा अर्थ है युद्ध करने पर ही जीत मिलती है। आलसी व्यक्ति जो अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं करता, वह सदैव पराजित ही रहता है और इसी पराजित को पराधीन कहा गया है।

पराधीन सपनेहु सुख नाही

पराधीन, जो स्वयं शक्ति से संपन्न नहीं है, अर्थात ऐसे पराजित व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं होता। वह दुः स्वप्न ही देखता है और जागृत अवस्था में भी हर समय बार-बार हार का सामना करना पड़ता है। तो इस युद्ध में, जिसे जीवन संग्राम कर सकते हैं, उसमें कार्यों को संपादित करने के लिए जीत आवश्यक है। प्रत्येक धावक दौड़ता अवश्य है, लेकिन जो अंतिम लाइन को सर्वप्रथम छूता है, वही विजित कहलाता है। केवल दौड़ने से कार्य पूरा नहीं होता है, कार्य को पूर्ण रूप से संपादित करने से ही उसकी सफलता का प्रसाद मनुष्य को प्राप्त होता है।

पराक्रम व्यक्ति का अस्त्र-शस्त्र

अब जीवन संग्राम है तो निश्चित रूप से इसके लिए उपकरण चाहिए। क्योंकि जीवन संग्राम में विजय का अर्थ है- धन, ऐश्वर्य, वैभव, यश, कीर्ति, ओज, स्वास्थ्य और इन सब के लिए चाहिए पराक्रम। पराक्रम व्यक्ति का अस्त्र-शस्त्र है। पराक्रम का अर्थ है- मैं अपनी बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए आक्रमण कर रहा हूं। उन बाधाओं पर, जिन्होंने मेरे जीवन को निर्बल और असहाय कर दिया है। शक्ति साधना का मूल उद्देश्य अपने भीतर पराक्रम को उदय करना है। जिस दिन पराक्रम जागृत हो जाता है, उस समय व्यक्ति अपने जीवन के सभी प्रकार के कार्य संपादित कर सकता है।

नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते वने।
विक्रमार्जितसत्त्वस्य स्वयमेव मृगेंद्रता।।

शेर को जंगल का राजा बनने के लिए अभिषेक की आवश्यकता नहीं होती, वह अपने पराक्रम और शक्ति से स्वतः जंगल का राजा बन जाता है।

पराक्रम के लिए व्यक्ति को चाहिए अस्त्र-शस्त्र। यदि आपके पास आयुध ही नहीं है तो आप जीवन में विजय कैसे प्राप्त करेंगे? हमारे सारे देवी- देवता अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित हैं। श्री राम के पास धनुष है, श्री कृष्ण के पास सुदर्शन चक्र है, विष्णु के पास चक्र है, हनुमान जी के पास गदा है, शिव के पास त्रिशूल है, ब्रह्मा के पास वेद रूपी अस्त्र है। अर्थात ज्ञान को भी अस्त्र का स्वरूप दिया गया है। सरस्वती के हाथ में पुस्तक और वीणा है। दुर्गा सप्तशती के द्वितीय अध्याय में महिषासुर मर्दिनी महालक्ष्मी से प्रार्थना है- मैं कमल के आसन पर बैठी हुई प्रसन्न मुख वाली महिषासुर मर्दिनी भगवती महालक्ष्मी का भजन करता हूं, जो अपने हाथों में अक्षमाला, फरसा, गदा, वाण, वज्र, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढ़ाल, शंख, घण्टा, मधुपात्र, शूल, पाश और चक्र धारण करती हैं।

सबसे बड़ा अस्त्र मेधा-शक्ति

विचार करें, आपके पास अस्त्र-शस्त्र है? शस्त्र हर एक के पास नहीं होता, लेकिन अस्त्र तो हर व्यक्ति के पास सदैव और सदैव विद्यमान रहते हैं। सबसे बड़ा अस्त्र तो मेधा शक्ति है। इस मेधा शक्ति से ज्ञान का विकास होता है और ज्ञान से बुद्धि का विकास होता है और जब ज्ञान और बुद्धि का समन्वय होता है तो आपके स्वयं के अस्त्र द्वारा कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

महाभारत काल में विभिन्न दिव्यास्त्रों का वर्णन आता है। दिव्यास्त्र मंत्रों से चलाए जाते हैं, जिन पर देवी-देवताओं का ही अधिकार होता है। इन दिव्यास्त्रों को केवल मंत्र विद्या द्वारा, तंत्र विद्या द्वारा ही चलाया जा सकता है। इसके लिए हाथों में कोई शस्त्र रखने की आवश्यकता नहीं है। दिव्यास्त्र में प्रमुख हैं- आग्नेयास्त्र, पर्जन्य, वायव्य, पन्नग, गरुड़, नारायणास्त्र, पाशुपत, ब्रह्मशिरा, एकाग्निन, अमोघास्त्र और ब्रह्मास्त्र।

एक प्रबल अस्त्र आग्नेयास्त्र ऐसा अस्त्र है, जिससे अग्नि का भयंकर दावानल उठ जाता है और पर्जन्य अस्त्र से अति भयंकर वर्षा होने लगती है। वायव्य अस्त्र से आंधी-तूफान का भयावह बवण्डर आ जाता है। गुरु अपने विशिष्ट शिष्यों को उनके ज्ञान शक्ति को तीव्र कर दिव्यास्त्र प्रदान करते हैं, अर्थात उसकी विद्या प्रदान करते हैं। दिव्यास्त्रों में प्रमुख ब्रह्मास्त्र की विद्या का ज्ञान कर्ण को परशुराम ने दिया। द्रोणाचार्य ने भी कौरवों समेत पांचों पांडवों को इसकी शिक्षा दी, लेकिन ब्रह्मास्त्र विद्या का पूर्ण ज्ञान कर्ण, अर्जुन, भीष्म, द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा के अलावा कोई ग्रहण नहीं कर सका। इन शिष्यों ने अपनी इस विद्या को साधना के द्वारा निरंतर जीवंत रखा। इसीलिए मानसिक अस्त्र साधना निरंतर आवश्यक है।

आप जो धूमावती, बगलामुखी, छिन्नमस्ता, महाकाली साधना करते हैं, वह भी अस्त्र साधना ही है। जब साधक गुरु कृपा से शक्ति सिद्ध हो जाता है, तो वह अपने मानसिक अस्त्रों द्वारा अपनी सारी बाधाओं का शमन कर सकता है।

विजयादशमी और अस्त्र पूजा

प्राचीन काल से ही नवरात्रि के पश्चात अगले दिन आने वाली दसवीं को अस्त्र-शस्त्र पूजा का दिवस कहा जाता है और इसी परंपरा में प्रत्येक व्यक्ति अपने अस्त्र-शस्त्रों की पूजा करता है, जिससे वह उसके मानस में सदैव स्थापित रहे और वह उनका उचित समय पर उपयोग कर सके। निर्बल पर अस्त्र चलाकर विजय प्राप्त करना मूर्खता है। अस्त्र तभी चलाना चाहिए, जब शत्रु भी सबल हो और आपकी जान पर आ पड़ी हो, तब अपने गुरु का आह्वान कर अपनी दिव्यास्त्र-ब्रह्मास्त्र विद्या का उपयोग करना चाहिए।

सबसे उच्च है दिव्यास्त्र-ब्रह्मास्त्र साधना और साधना का अर्थ है अपनी प्रतिभा को तराशते रहना। जिस प्रकार तलवार को बार-बार धार नहीं देते हैं तो उसका पैनापन भी कम हो जाता है, अर्थात जंग लग जाता है। उसकी धार नहीं बनी रहती है। तो निरंतर ब्रह्मास्त्र-दिव्यास्त्र साधना ऐसी विद्या है, जो अपने मानस को शक्ति उपयोग के लिए सन्नद्ध करना है, क्योंकि जीवन में शत्रु अर्थात बाधा कहकर नहीं आते, वह तो अकस्मात आते हैं और यदि आपका जीवन साधनात्मक है और आप मंत्र सिद्ध हैं तो तत्काल आप अपने दिव्यास्त्र-ब्रह्मास्त्र का उपयोग कर बाधा का शमन कर सकते हैं।

शक्तिवान बनना केवल श्रेष्ठ नहीं, यह तो जीवन का सौन्दर्य है। शक्तिवान का तात्पर्य शारीरिक क्षमता से नहीं, शारीरिक मापदंड से नहीं। शक्तिवान का तात्पर्य है- जो वह चाहें, उसे प्राप्त करें..., पूरी क्षमता के साथ..., तेजस्विता के साथ..., रोते गिड़गिड़ाते हुए नहीं...। ... और यह संभव है, साधना द्वारा वह शक्ति प्राप्त कर शक्तिवान बनें, क्षमतावान बनें और आने वाली आपदाएं, चाहे वे सामाजिक हों, पारिवारिक हों या राजनीतिक, इस साधना द्वारा जीवन की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी, किसी भी समस्या का निराकरण किया जा सकता है।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

ऐसे हुआ मिथिला में खण्डवाल राजवंश (दरभंगा राज) का उदय

अतीत की परछाइयाँ...
मिथिला का इतिहास

रामबाबू नीरव
वरिष्ठ साहित्यकार
पुपरी, सीतामढ़ी (बिहार)।

मिथिला में ओइनवार राजवंश के अंतिम राजा लक्ष्मी नारायण सिंह देव, जिन्हें कंस नारायण सिंह देव के नाम से भी जाना जाता था, के पतन के बाद पुनः मिथिला अंधकार युग में चला गया। यानि यहां कोई ऐसा शक्तिशाली राजा नहीं हुआ, जो मिथिला राज्य का समोचित संचालन कर सके। दिल्ली की सल्तनत भी तुगलक वंश की समाप्ति के बाद अस्थिर हो चुकी थी। तुगलक के बाद लोदी वंश का शासन हुआ, मगर लोदीवंश का शासन भी अस्थिर रहा। लोदी वंश (इब्राहिम लोदी) के काल में दिल्ली सल्तनत पर बाबर के नेतृत्व में तीव्र आक्रमण होने लगे। इसलिए मिथिला का राज्य केन्द्रीय सत्ताविहीन हो गया। परिणाम यह हुआ कि कई छोटे-छोटे सामंत मिथिला का राज्य प्राप्त करने के लिए आपस में लड़ने और मरने लगे। यहां पूर्णरूपेण अराजकता और हिंसा की स्थिति बन चुकी थी।

ऐसी स्थिति पुनः लगभग 30 वर्षों तक रही। जब मुगल राजवंश के तीसरे राजा बादशाह अकबर पूर्ण रूप से दिल्ली सल्तनत पर काबिज हो गये, तब उनका ध्यान मिथिला जैसे छोटे-छोटे राज्यों की ओर गया, जो राज्य शासकविहीन हो चुके थे। बादशाह अकबर को अपने प्रधान सेनापति राजा मानसिंह के द्वारा यह भी ज्ञात हुआ कि मिथिला की प्रजा किसी मुस्लिम जागीरदार की अधीनता स्वीकार करने को तैयार नहीं है। बादशाह अकबर ने राजा मानसिंह को मिथिला के किसी ऐसे भूपति (जमींदार/सामंत) की तलाश करने का हुक्म दिया, जो प्रतिभाशाली, शक्तिशाली और लोकप्रिय होने के साथ-साथ मुगल साम्राज्य के प्रति पूर्णरूप से वफादार हो। उस समय मिथिला में राजपूतों को छोड़कर कई ऐसे ब्राह्मण भूपति थे, जिनके पूर्वज किसी शक्तिशाली राजघराने से सम्बन्ध रखते थे। उन्हीं में से एक थे खण्डवाल ब्राह्मण राजवंश के वंशज महेश ठाकुर। दरअसल महेश ठाकुर मुगल राजवंश के राजपुरोहित पं. चन्द्रपति ठाकुर के द्वितीय पुत्र थे। जब राजा मानसिंह ने बादशाह अकबर को महेश ठाकुर की पूरी जानकारी दी तब बादशाह अकबर को महेश ठाकुर मिथिला के राजा के रूप में जंच गये। उन्होंने अपने राजपुरोहित चन्द्रपति ठाकुर को दरबार में बुलाकर पूछा -'क्या आप अपने पुत्र महेश ठाकुर को मिथिला के राजा के रूप में देखना चाहते हैं?' बादशाह की बात सुनकर पं. चन्द्रपति ठाकुर एकदम से विस्मृत रह गये। उन्होंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि एक दिन उनका पुत्र मिथिला राज्य का राजा बनेगा। वे बादशाह के समक्ष नतमस्तक हो गये। उनके बदले राजा मानसिंह ने ही उत्तर दिया -'बादशाह सलामत, पंडित जी को आपका हर हुक्म कबूल है।' तत्काल ही बादशाह अकबर ने पं. चन्द्रपति ठाकुर के दूसरे पुत्र महेश ठाकुर को मिथिला राज्य का राजा घोषित करते हुए पट्टा उनके नाम से जारी कर दिया। इस तरह बादशाह अकबर की मेहरबानी तथा राजा मानसिंह की कृपा से मिथिला (तिरहुत) का राज्य राजा महेश ठाकुर को प्राप्त हुआ।

मुगलकाल में बदला मिथिला का स्वरूप

मुगल काल में मिथिला का स्वरूप बदल गया। नये राजा महेश ठाकुर ने 1556 ई० में सत्ता संभाली। उन्होंने अपने राज्य की राजधानी मधुबनी से लगभग 10 मील पूरब भउर (भौर) ग्राम में बनायी। इनका राज्य तिरहुत क्षेत्र में लगभग 8380 किलोमीटर तक फैला हुआ था। 4495 गांव इस राज्य के अधीन थे। भारत के छोटे-छोटे रजवाड़ों में मिथिला के इस खण्डवाल राजवंश की अपनी एक अलग पहचान तथा प्रतिष्ठा थी। राजा महेश ठाकुर ने राजा बनते ही खुदको खण्डवाल वंश का श्रेष्ठ मैथिल ब्राह्मण घोषित किया। वे शांडिल्य गोत्र के थे। इसलिए खुद को श्रेष्ठ मानते थे। बाद के दिनों में मिथिला की सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने में इस राजवंश की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राजा महेश ठाकुर ने लगभग 40 वर्षों तक मिथिला पर शासन किया। उन्होंने बादशाह अकबर के बाद उनके पुत्र जहांगीर के सल्तनत को भी देखा था। उनकी चौथी पीढ़ी के राजा शुभंकर ठाकुर ने दरभंगा के निकट शुभंकरपुर बसाया। राजा शुभंकर ठाकुर ने अपनी राजधानी मधुबनी से उत्तर भउआरा (भौआरा) ग्राम में बनायी। फिर 13 वें राजा प्रताप सिंह ने झंझारपुर को अपनी राजधानी बनायी। इस राजवंश की चौदहवीं पीढ़ी के राजा माधव सिंह ने सन् 1785 ई० में मिथिला राज्य की सत्ता संभालते ही इसकी राजधानी झंझारपुर से स्थानांतरित करके दरभंगा ले आए। फिर उस समय से लेकर आजादी प्राप्ति तक मिथिला की राजधानी दरभंगा ही रही।

कहा जाता है कि दरभंगा शहर का नाम यहां के एक प्रसिद्ध नबाब दरभंगी खां के नाम पर रखा गया था। परंतु कुछ इतिहासकार और विद्वान इससे सहमत नहीं हैं। ऐसे विद्वानों और इतिहासकारों का अपना अलग तर्क है। उनके तर्क से दरभंगा दो शब्दों दर+भंगा से बना है। दर का अर्थ द्वार या दरवाजा होता है। भंग का अपभ्रंश रूप बंग यानि बंगाल होता है। इस तरह दरभंगा का अर्थ हुआ बंगाल का द्वार या दरवाजा।

मुगल बादशाह जहांगीर के शासन काल में ही अंग्रेज (ईस्ट इंडिया कंपनी) भारत भूमि पर अपने पांव पसारने लगे थे। सन् 1608 ई० में कैप्टन विलियम हाकिंस के नेतृत्व में अंग्रेजों का पहला जत्था गुजरात के सूरत बंदरगाह पर उतरा था। तब शायद विलियम हाकिंस ने भी नहीं सोचा होगा कि पूरे विश्व में सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत को एकदिन वे लोग अपना उपनिवेश बनाकर यहां की प्रजा को गुलाम बना लेंगे। खण्डवाल राजवंश की ग्यारहवीं पीढ़ी के राजा नरेंद्र सिंह के शासन काल के दौरान सन् 1765 ई० में अंग्रेजों ने बिहार, बंगाल और उड़ीसा प्रान्तों को पूर्णरूपेण अपने अधिकार में ले लिया। फिर तो अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करना दरभंगा राज्य की मजबूरी हो गयी।

वेब सीरीज के रूप में भी अब होगी मैथिली सिनेमा की धमक

27 से देखी जा सकेगी पहली मैथिली वेब सीरीज 'नून-रोटी'

मिथिला में पर्यटन एवं व्यावसायिक आत्मनिर्भरता का किया गया है जीवंत चित्रण

संवाददाता

बोकारो : वेब सीरीज के इस दौर में मैथिली फिल्म जगत ने भी बुलंदी के साथ अपने कदम आगे बढ़ा दिए हैं। अब अब वेब सीरीज के रूप में भी मैथिली सिनेमा की धाक जमने जा रही है। मिथिला माटी की संस्कृति, परंपरा और विशेषताओं को सोशल मीडिया पर मुखरता से रखने वाले विकास झा ने यह पहल की है। मधुर मैथिल चैनल के संचालक विकास झा और उनकी सहधर्मिणी रोशनी झा लोकप्रिय हास्य मनोरंजक कार्यक्रम अलर-बलर से मिथिला में खास तौर पर जाने जाते हैं। विकास अपनी टीम के सहयोग से मैथिली में पहली बहुप्रतीक्षित वेब सीरीज 'नून रोटी' लेकर आ रहे हैं। 27 अक्टूबर को यह रिलीज होने जा रही है। कुल आठ एपिसोड वाली इस वेब सीरीज का प्रदर्शन यूट्यूब चैनल मधुर मैथिली पर होगा। बोकारो में एक प्रेसवार्ता में दौरान सीरीज के निर्देशक-लेखक विकास झा ने कहा कि आनंदम ग्रुप के सहयोग से तैयार यह मैथिली वेब सीरीज बिहार और मिथिला प्रान्त में व्याप्त बेरोजगारी और पलायन की समस्या को अलग दृष्टिकोण से रेखांकित करती है। साथ ही मिथिला क्षेत्र में पर्यटन और व्यावसायिक आत्मनिर्भरता के लिए क्या विकल्प हो सकते हैं, इस विषय पर भी गंभीर योजना और समाधान बताने का प्रयास करती है। समाज में सरकारी नौकरी के प्रति एक अलग आकर्षण और स्वरोजगार, व्यवसाय आदि की बात करने पर अभिभावक

कैसे अपने बच्चों से विमुख हो जाते हैं, आगामी वेब सीरीज में इसका भी जीवंत चित्रण किया गया है।

उन्होंने कहा, चूंकि झारखंड की द्वितीय राजकीय भाषा मैथिली है, इसलिए मैथिली सिनेमा या वेब सीरीज का प्रचार-प्रसार झारखण्ड में भी अवश्य होना चाहिए। नून-रोटी की कार्यकारी निर्माता सह- अभिनेत्री रौशनी झा ने बोकारो के मैथिल समाज एवं झारखण्ड की समस्त जनता से मैथिली भाषा में बनी यह सीरीज जरूर देखने की अपील की है।

एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं में भी वेब सीरीज का निर्माण समय के साथ चलने की अनिवार्यता और सिनेमा के क्षेत्र में सशक्तिकरण का एक अहम पायदान है। नून रोटी की शूटिंग दरभंगा, मधुबनी, सहरसा, सीतामढ़ी, भागलपुर और पूर्वी चंपारण में हुई है। मुख्य कलाकारों में दिवाकर झा, आदर्श भारद्वाज, ऋषभ कश्यप और मणि कौशिक संग निखिल मिश्र, प्रज्ञा झा, सत्येन्द्र झा, सोहेल सुलतान, प्रशांत राणा, सागर सिंह और सुमित श्री शामिल हैं। सभी मिथिला, बिहार के रहने वाले हैं। निर्माता लेखक निर्देशक विकास झा और उनकी पत्नी रोशनी झा ने मुख्य किरदार निभाया है। छायांकन टीम में आनंद सोनी, विकास झा हैं और सम्पादन महेश ने किया है। रंग शुद्धि शशांक झा और ध्वनि विन्यास शंकर सिंह ने किया है।

पेज- एक का शेष

अमर 'इन'...

आबादी आदिवासियों (एसटी) की है, जबकि लगभग 11 प्रतिशत आबादी दलित (एससी) की है। इसलिए भाजपा की ओर से नेताओं को आबादी के हिसाब से पार्टी और सरकार में जगह दी जा रही है।

चार साल से खाली थी नेता प्रतिपक्ष की कुर्सी : दरअसल, झारखंड विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष की कुर्सी पिछले चार साल से खाली पड़ी थी। स्पीकर कोर्ट में बाबूलाल मरांडी के दल-बदल मामले की सुनवाई होने के कारण नेता प्रतिपक्ष का मामला लटका हुआ था। भाजपा बार-बार स्पीकर से बाबूलाल मरांडी को नेता प्रतिपक्ष बनाने की मांग कर रही थी, लेकिन स्पीकर रवींद्र नाथ महतो भाजपा से किसी अन्य को नेता विधायक दल बनाने की सलाह दे रहे थे। लगभग साढ़े तीन साल तक भाजपा ने बाबूलाल मरांडी को नेता प्रतिपक्ष की मान्यता दिलाने के लिए काफी हंगामा भी किया। लेकिन, आखिरकार करीब साढ़े तीन साल बाद भाजपा की ओर से अमर बाउरी को विधायक दल का नेता घोषित किया गया और इसके साथ ही श्री बाउरी विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बनाये गये। मालूम हो कि इसके पहले 2019 में हुए विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा ने बाबूलाल मरांडी को पार्टी विधायक दल का नेता चुना था, लेकिन स्पीकर ने उन्हें नेता प्रतिपक्ष के तौर पर अंत तक मान्यता नहीं दी।

राज्यपाल बन प्रदेश की राजनीति से बाहर हुए रघुवर दास : झारखंड में भाजपा सतर्क हो गई है। भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने मुख्यमंत्री के रूप में खारिज हो चुके राज्य के पूर्व सीएम और जमशेदपुर के पूर्व विधायक रघुवर दास को ओडिशा का राज्यपाल बनाकर उन्हें प्रदेश की राजनीतिक मुख्यधारा से बाहर कर दिया है। दरअसल, जमशेदपुर से अपना राजनीतिक करियर शुरू करने वाले रघुवर दास 2014 से 2019 तक पांच साल झारखंड के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। देखा जाय तो जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव नजदीक आ रहे हैं, वैसे-वैसे झारखंड भाजपा में बड़े उलटफेर देखने को मिल रहे हैं। राजनीति के गलियारों में यही चर्चा है कि रघुवर दास को राज्य की राजनीति से बाहर का रास्ता केवल इसलिए दिखाया गया है, ताकि बाबूलाल मरांडी को सबसे आगे लाया जा सके। वैसे भी, वर्ष 2019 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने रघुवर दास को ही मुख्यमंत्री के रूप में प्रोजेक्ट किया था, लेकिन न सिर्फ भाजपा को सत्ता से हाथ धोना पड़ा, बल्कि खुद रघुवर दास भी चुनाव हार गए। दरअसल, 2019 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को मिली शिकस्त के रघुवर दास के नेतृत्व को ही कारण माना गया। इस पराजय के बाद उन्हें भाजपा का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया था। श्री दास इससे पहले भी दो बार पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रह चुके हैं।

खत्म होगी अब हेमंत सरकार की पैंतरेबाजी, गूंजेगी दलितों-पिछड़ों की आवाज : अमर

नेता प्रतिपक्ष बनाए जाने के बाद पहली बार अपने गृहजिला पहुंचने पर अमर बाउरी का भव्य स्वागत किया गया। चंदनकियारी में अपने आवास पर पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि यह चंदनकियारी की जनता के आशीर्वाद का परिणाम है। उन्होंने मुझ जैसे एक साधारण बेटा को मौका दिया एवं भरोसा किया। आज चंदनकियारी के जनता के लिए गौरव का दिन है। कहा कि झारखंड विधानसभा को पौने चार साल बाद नेता प्रतिपक्ष मिला है। इन कालखंड में झारखंड की गठबंधन सरकार ने हर मोर्चे पर राज्यवासियों को धोखा और वादा खिलाफी के अलावा कुछ नहीं दिया है। अब इनकी चालाकी और पैंतरेबाजी का दिन खत्म हो चुका है। पहले भी हमलोगों ने विधानसभा में सरकार की चोरी को पकड़ने का काम किया है। अब राज्य के साढ़े तीन करोड़ गरीब दलित व पिछड़ों की आवाज सदन में गूंजेगी। आने वाले विधानसभा चुनाव में जनता इस बेईमान सरकार को उखाड़ फेंकने का काम करेगी। मौके पर अम्बिका खवास, जयदेव राय, खगेन माहथा, विनोद गोराई आदि मौजूद थे।

दम तोड़ रही इंसानियत, बिलख रही ममता

इजरायल-हमास युद्ध : इन मासूमों का क्या कसूर?

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : खिलौने से खेलने वाले हाथ लहूलुहान हैं। मासूम आंखों से खून के आंसू निकल रहे हैं तो कोई धमाकों में चिथड़ा बन उड़ गया। जिस गोद में कल तक वह बच्चा खेला करता था, उसमें तड़प-तड़पकर वह दम तोड़ रहा है। बिलखती ममता और हर तरफ कारुणिक चीत्कार, यह दर्दनाक त्रासदी है इन दिनों गाजापट्टी की। इजरायल हमास युद्ध एक पखवाड़ा बीतने के बाद भी थमा नहीं। अब वहां इस युद्ध का शिकार मुख्य रूप से बच्चे ही बन रहे हैं और इंसानियत कराह रही है। अब भला इन मासूमों का, मजलूमों का क्या कसूर, जो वो जान गंवा रहे हैं, अनाथ हो रहे हैं। अभी तो उन्होंने ठीक से दुनिया देखी भी नहीं, मां की गोद से उतरकर घर की दहलीज से बाहर कदम भी नहीं रखा और बदनसीबी उसे ऐसे दिन दिखा रही है। हद तो तब हो गई जब अस्पताल पर हमला हुआ। इसके लिए इजरायल-हमास दोनों एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप कर रहे हैं। हमला जिस किसी ने भी करवाया, इसकी जितनी निंदा की जाय, कम ही होगी। भारत समेत पूरी दुनिया ने अस्पताल पर हमले को दुर्भाग्यपूर्ण बताया है।

गाजा के अस्पताल पर हुए हमले में सैकड़ों मजलूमों की मौत पर दुनियाभर में आक्रोश है। इस नरसंहार को युद्ध नियमों के खिलाफ माना जा रहा है। कई अरब मुल्कों ने इस हमले के लिए इजरायल को जिम्मेदार ठहराया है। हालांकि, इजरायल का कहना है कि अस्पताल पर जो रॉकेट गिरा वह हमास का था। संयुक्त राष्ट्र में 22 अरब देशों के समूह अरब लीग ने कहा कि इजरायल को हमले तत्काल बंद करने होंगे। इसे लेकर दुनिया के कई देशों में इजरायल के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए। वहीं, अमेरिका ने साफ किया कि वह पूरी तरह इजरायल के साथ है। *(फोटो साभार : गूगल)*

सबसे ज्यादा कहर बच्चों पर

इजराइल की ओर से गाजा के लोगों को उत्तरी इलाका खाली करने का अल्टीमेटम दिए जाने के बाद दोहरी मार पड़ रही है। खबरों की मानें तो इजराइल ने गाजा के दक्षिण क्षेत्र में हमला किया है, जहां उत्तरी क्षेत्र से पलायन कर लोग दक्षिण में पहुंचे थे। वैसे हमलों में सबसे ज्यादा कहर बच्चों पर टूट रहा है। जानकारी के मुताबिक, गाजा की करीब 23 लाख में से आधी आबादी 18 वर्ष से कम उम्र की है। रिपोर्ट्स के अनुसार, 7 अक्टूबर के हमास के हमलों के बदले में इजराइल द्वारा गाजा पर लगातार बमबारी शुरू करने के बाद से मारे गए 3,785 लोगों में 1,524 बच्चे शामिल हैं। 17 अक्टूबर को एक अस्पताल पर हुए हमले में 500 लोग मारे गए थे। इसमें बड़ी संख्या बच्चों की थी।

युद्ध-विराम की मांग

अरब देशों ने तत्काल युद्ध-विराम की मांग की है। संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन के राजदूत रियाद मंसूर ने कहा कि गाजा में पीड़ितों को जल्द मानवीय मदद पहुंचाई जाए और फलस्तीनियों का जबरन विस्थापन रोका जाए। बयान जारी करने वाले प्रमुख अरब देशों में सऊदी अरब, जॉर्डन, मिस्र, संयुक्त अरब अमीरात और इराक शामिल हैं।

पीड़ितों की मदद को बढ़े हाथ

इजरायल-हमास युद्ध के बीच गाजा में पीड़ितों की मदद के लिए भारत समेत कई देशों ने हाथ बढ़ाए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फिलिस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास से दूरभाष पर बातचीत में कहा कि भारत फिलस्तीन के लोगों के लिए मानवीय मदद जारी रखेगा। वहीं, रूस, चीन, जर्मनी समेत कई देशों और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी मदद देने का ऐलान किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने ह्यएक्सह्व पर पोस्ट में कहा, फिलिस्तीनी राष्ट्रपति से बातचीत में अस्पताल में नागरिकों की मौत पर संवेदना जताई। इजराइल-फलस्तीन मुद्दे पर भारत के लंबे समय से जारी सैद्धांतिक रुख को भी दोहराया।

वंदे भारत के बाद अब नमो भारत- 'रैपिड' हुआ रेल सफर

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : एनसीआर की यातायात-व्यवस्था को रैपिड गति मिल गई है। वंदे भारत की सफलता के बाद अब रैपिड रेल सेवा के तहत नमो भारत ट्रेन का शुभारंभ हुआ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के साहिबाबाद में इसे हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान पीएम मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के द्वारा बेंगलुरु मेट्रो के 'ईस्ट वेस्ट कॉरिडोर' के दो हिस्सों का भी औपचारिक उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि शुक्रवार से साहिबाबाद से दुहाई डिपो तक नमो भारत का संचालन शुरू हो गया है। इस दौरान पीएम मोदी ने विपक्ष पर तंज कसते हुए कहा कि जिसका हम शिलान्यास हम करते हैं, उसका उद्घाटन भी हम करते हैं। पीएम मोदी ने कहा कि आरआरटीएस के पहले चरण को हरी झंडी दिखाई जा चुकी है, जब हम अगले 18 महीने में दिल्ली-मेरठ पूर्ण सेवा शुरू होगी, तब भी मैं आपके बीच रहूंगा। उन्होंने कहा कि मेरा मानना है कि भारत तभी प्रगति कर सकता है जब राज्य विकसित हो जाएं।

ट्रेन में ड्राइवर सहित सभी कर्मी महिलाएं

इस नई ट्रेन में ड्राइवर से लेकर सभी कर्मचारी महिलाएं हैं। ये भारत की नारीशक्ति के बढ़ते कदम का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि नमो भारत ट्रेन में आधुनिकता भी है और स्पीड भी है, ये नमो भारत ट्रेन नए भारत के नए सफर और नए संकल्पों को परिभाषित कर रही है।

प्रगति की नई गाथा गढ़ रहा भारत

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि उन्होंने कहा कि 21वीं सदी का हमारा भारत आज हर क्षेत्र में प्रगति की नई गाथा लिख रहा है। आज का भारत चंद्रयान को चंद्रमा पर उतारकर दुनिया में छाया हुआ है। आज का भारत जी 20 का इतना शानदार आयोजन करके दुनिया के लिए आकर्षण, उत्सुकता और दुनिया का भारत के साथ जुड़ने का एक नया अवसर बन गया है। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि मेट्रो निर्माण कार्यों में अन्य देश हमसे काफी आगे था, लेकिन अब हम उनके बराबर ही नहीं पहुंचे हैं बल्कि हम जल्द ही उनसे आगे निकलने वाले हैं। 2-3 वर्ष में भारत अमेरिका को पीछे छोड़कर दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं में से दूसरी सबसे बड़ी मेट्रो सिस्टम बनने जा रहा है।

सभी दंत समस्याओं का एक समाधान
डॉ. नरेन्द्र मेमोरियल डेंटल सेंटर
138 को-आपरेटिव कॉलोनी (बोकारो)
दांत एवं मुंह संबंधी सभी बीमारियों के इलाज की पूर्ण सुविधा।
समय : सुबह 9.30 से दोपहर 2.30 बजे तक
संध्या 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक
(शनिवार अवकाश)
डा. निकेत चौधरी (संध्या में)

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा डीबी कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, गोविन्दपुर रोड, जीके आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **कैप्टन संजय,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)